णाणसारो

(ज्ञानसार)

—प्रो. (डॉ.) अनेकांत कुमार जैन*

(उग्गाहा)

णमो धरसेणाणं च भूयबलीपुप्फदंताणं सययं।
सुदपंचमीदिवसे य रचिद पागदसुयछक्खंडागमं॥

श्रुत पंचमी के दिन भगवान महावीर की मूल वाणी द्वादशांग के बारहवें अंग दृष्टिवाद के अंश रूप श्रुत अर्थात् षटखंडागम को प्राकृत भाषा में लिखने वाले आचार्य पुष्पदंत और भूतबली तथा उन्हें श्रुत का ज्ञान देने वाले उनके गुरु आचार्य धरसेन को मेरा सतत नमस्कार है।

सम्मणाणं

पंचविहसम्मणाणं मदिसुदओहिमणपज्जयकेवलं।
परोक्खं पच्चक्खं अप्पा णाणसहावो णिद्दिट्ठं॥ 1॥

सम्यग्ज्ञान पांच प्रकार का है– मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञान। यह परोक्ष और प्रत्यक्ष के भेद से दो प्रकार का है। आत्मा ज्ञान स्वभावी कहा गया है।

जं इंदियमणओ तं परोक्खं खलु मइसुयणाणाणि य।
जमप्पेण लद्धं तं अदिंदियणाणं य होदि पच्चखं॥ 2॥

जो इन्द्रिय और मन से होता है वह परोक्ष ज्ञान है, उसे मति और श्रुत ज्ञान कहते हैं और जो सीधे आत्मा से उपलब्ध होता है वह अतींद्रिय प्रत्यक्ष ज्ञान है।

*प्रोफेसर, जैनदर्शन विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली-110016 ई-मेल : anekant76@gmail.com मोबाईल : 9711397716

पमाणं

सम्मणाणं पमाणं पच्चक्खपरोक्खभेओत्तं च।
विसदं पच्चक्खं खलु संववहारपारमट्ठियोत्तं॥ 3॥

सम्यग्ज्ञान प्रमाण है जो प्रत्यक्ष और परोक्ष के भेद से मुख्य रूप से दो प्रकार का कहा गया है। विशद ज्ञान को प्रत्यक्ष प्रमाण कहते हैं और वह प्रत्यक्ष प्रमाण व्यवहार (इन्द्रिय) और पारमार्थिक (अतीन्द्रिय) के भेद से दो तरह का कहा गया है।

परोक्खं पंचविहं समिइपच्चभितक्काणुमाणमेव।
आगम य चक्खूरूवं उत्तं परोक्खपमाणमविसदो॥ 4॥

अविशद ज्ञान को परोक्ष प्रमाण कहते हैं। यह स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क, अनुमान और आगम के भेद से परोक्ष प्रमाण पाँच प्रकार का है। आगम आँख की तरह है।

णयो

णयवत्थुपमाणंसो सविपेक्खवत्ताणायभिवायो।
जं सुणयसमूहं तं सम्माणेयंत होदि णयमूलं॥ 5॥

वस्तु या प्रमाण का अंश नय है, वक्ता का या ज्ञाता का सापेक्ष अभिप्राय नय है, सुनय का समूह अनेकांत है और सम्यक् अनेकांत नयमूलक होता है।

दव्वपज्जयत्थिया य णेगमसंगहववहारोजुसद्द।
समहिरुढएयंभूया सत्तदुहविहणिच्छयववहारदो॥ 6॥

द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक, निश्चय और व्यवहार के भेद से नय दो प्रकार का है और नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ़, एवम्भूत के भेद से वह सात प्रकार का है।

अणेयंतो

परव्वरएगवत्थुम्मि विरोहि सहेवाणंतधम्माणं।
पगासणमणेयंतो जेण विणा संववहारं ण होदि॥ 7॥

एक वस्तु में परस्पर विरोधी अनन्त धर्मों का एक साथ प्रकाशित होना अनेकांत है जिसके बिना लोक में सम्यक् व्यवहार भी नहीं होता है।

सियवायो

सियणिवायजुत्तो खलु अणेयंतसापेक्खवायगो य।
सियवायो जिणधम्मे पज्जुत्तो सव्वत्थ जिणपवयणे॥ 8॥

स्यात् निपात से युक्त और अनेकांत का सापेक्ष वाचक स्याद्वाद जिन धर्म और

जिन प्रवचन में सर्वत्र प्रयुक्त होता है ।

सत्तभंगी

सत्तभंगसमुच्चओ सत्तभंगीवाओ सियवायस्स।
सुणयपमाणभेयेण सत्तेवभंगी पुच्छावसेण य॥ 9॥

स्याद्वाद का सप्तभंग के समुच्चय वाला सप्तभंगी वाद है । प्रश्न भी सात ही होने से सात ही भंग होते हैं और सुनय सप्तभंगी और प्रमाण सप्तभंगी के भेद से ये सप्तभंगी भी दो प्रकार की है ।

सियात्थि सिय णत्थि खलु सियात्थिणत्थि य सिय अवत्तव्वं।
सियात्थि अवत्तव्वं सिय णत्थि अवत्तव्वं च उहयं य॥ 10॥

स्यात् अस्ति, स्यात् नास्ति, स्यात् अस्तिनास्ति, स्यात् अवक्तव्य, स्यात् अस्ति अवक्तव्य, स्यात् नास्ति अवक्तव्य, स्यात् अस्ति नास्ति अवक्तव्य च –ये सप्त भंग हैं।

णाणसारो

सम्मणाणाराहइ य पंचमयाले सियवायरूवेण।
सो अदिंदियाणंदं लहइ 'अणेयंत' सरूवं अप्पं॥ 11॥

इस विषम पंचमकाल में भी जो सम्यग्ज्ञान की स्याद्वाद रूप से आराधना करता है ,वह अतीन्द्रिय आनंद और अनेकांत स्वरूपी आत्मा को प्राप्त करता है।

❖❖

राज्यश्री और तपःश्री

'प्रेयसीयं तवैवास्तु राज्यश्रीर्या त्वयादृता।
चोचितैषा मामयुष्मन् बन्धो न हि सतां मुदे॥
विषकण्टकजालीव त्याज्यैषा सर्वथापि नः।
निष्कण्टका तपोलक्ष्मीं स्वाधीनां कर्तुमिच्छताम्॥'

—आचार्य जिनसेन, महापुराण, 36/97-99

अर्थ— (बाहुबलि पाँचों प्रकार के युद्ध के बाद भरत से कहते हैं कि) हे आयुष्मान् भरत! यह राज्यलक्ष्मी मेरे योग्य नहीं है, क्योंकि तुमने इसका अत्यन्त समादर किया है, अतः यह तुम्हारी प्रिय-पत्नी के तुल्य है। बन्धन की सामग्री सत्पुरुषों को आनंदप्रद नहीं होती है। मुझे तो अब यह विषैले काँटों के समूह से समन्वित प्रतीत हो रही है, अतः यह मुझे पूर्णतः त्याज्य है। मैं तो निष्कण्टक तपःश्री को अपने आधीन करने की आकांक्षा रखता हूँ। (अर्थात् अब मैं राज्यश्री को छोड़कर तपःश्री को अंगीकार करने जा रहा हूँ।)